प्रत्यक्ष प्रभावी, संकट मोचक माता पद्मावती इकतीसा

।। दोहा ।।

देवी माँ पद्मावती, ज्योति रूप महान।
विघन हरो, मंगल करो, करो मात कल्याण ।।1।।

।। चौपाई ।।

जय-जय-जय पद्मावती माता
तेरी महिमा त्रिभुवन गाता।
मन की आशा पूर्ण करो माँ
संकट सारे दूर करो माँ ।।2।।

तेरी महिमा परम निराली,
भक्तों के दुख हरने वाली।
धन-वैभव-यश देने वाली,
शान तुम्हारी अजब निराली ।।3।।

बिगड़ी बात बनेगी तुम से,
नैया पार लगेगी तुम से।
मेरी तो बस एक अरज है,
भव से निकलूँ यही गरज है ।।4।।

चतुर्भुजी माँ हंसवाहिनी,
महर करो माँ मुक्तिदायिनी।
किस विध पूजूँ चरण तुम्हारे,
निर्मल हैं बस भाव हमारे ।।5।।

मैं आया हूँ शरण तुम्हारी,
तू है माँ जग तारण हारी।
तुम बिन कौन हरे दुख मेरा,
रोग-शोक-संकट ने घेरा ।।6।।

तुम हो कल्पतरू कलियुग की,
तुमसे आशा सतयुग की।
मंदिर-मंदिर मूरत तेरी,
हर मूरत में सूरत तेरी ।।7।।

रूप तुम्हारे हुए हैं अनगिन,
महिमा बढ़ती जाती निशदिन।
तुमने सारे जग को तारा,
सबका तूने भाग्य सँवारा ।।8।।

हृदय कमल में वास करो माँ,
सिर पर मेरे हाथ धरो माँ।
मन की पीड़ा हरो भवानी,
मूरत तेरी लगे सुहानी ।।9।।

पद्मावती माँ पद्म-समाना,
पूज रहे सब राजा-राणा।
पद्म-हृदय, पद्मासन सोहे,
पद्म-रूप, पद-पंकज मोहे ।।10।।

महामंत्र की मिली जो शरणा,
नाग-योनि से पार उतरना।
पारसनाथ हुए उपकारी,
जय-जयकार करे नर नारी ।।11।।

पारस प्रभु जग के रखवारे,
पद्मावती प्रभु पार्श्व उबारे।
जिसने प्रभु का संकट टाला,
उसका रूप अनूप निराला ।।12।।

कमठ-शत्रु क्या करे, बिगाड़े,
पद्मावती जहँ काज सुधारे।
मघमाली की हर चट्टानें,
माँ के आगे सब चित्त खाने ।।13।।

माँ ने प्रभु का कष्ट निवारा,
जन्म-जन्म का कर्ज उतारा।
पद्मावती दया की देवी,
प्रभु-भक्तों की अविरल सेवी ।।14।।

प्रभु भक्तों की मंशा पूरे,
चिंतामणी सम चिंता चूरे।
पारस प्रभु का हो जयकारा,
पद्मावती का हो झंकारा ।।15।।

माथे मुकुट, भाल सूरज ज्यों,
बिन्दिया चमक रही चंदा ज्यों।
अधरों पर मुस्कान शोभती,
माँ की मूरत नित्य मोहती ।।16।।

सुरजन मुनिजन माँ को ध्यावे,
संकट नहीं सपने में आवे।
माँ का जो जयकार बोले,
उनके घर सुख-संपति बोले ।।17।।

ऊँ ह्रीं श्रीं क्लीं मंत्र से ध्याऊँ,
धूप-दीप-नैवेद्य चढाऊँ।
रिद्धी-सिद्धि सुख संपति दाता,
सोया भाग्य जगा दो माता ।।18।।

माँ को पहले भोग लगाऊँ,
पीछे ही खुद भोजन पाऊँ।
माँ के यश में अपना यश हो,
अंतरमन में भक्ति-रस हो ।।19।।

सुबह उठो, माँ की जय बोलो,
साँझ ढले, माँ की जय बोलो।
जय-जय माँ, जय-जय नित तेरी,
मदद करो माँ अविरल मेरी ।।20।।

शुक्रवार माँ का दिन प्यारा,
जिसने पाँस बरस व्रत धारा।
उस का काज सदा ही सँवरे,
माँ उसकी हर मंशा पूरे ।।21।।

एकासन-व्रत-नियम पालकर,
धूप-दीप-चंदन पूजन कर।
लाल-वेश हो, चूड़ी कंगना,
फल-श्रीफल-नैवेद्य भेंटना ।।22।।

मन की आशा पूरी हो जब,
माला-मुकुट चढ़ाऊँ मैं जब।
अंतर में हो शुक्रगुजारी,
माँ का व्रत है मंगलकारी ।।23।।

मैं हूँ माँ बालक अज्ञानी,
पर तेरी महिमा है पहचानी।
सांचे मन से जो भी ध्यावे,
सब सुख भोग परम पद पावे ।।24।।

जीवन में माँ का संबल हो,
हर संकट में नैतिक बल हो।
पाप न होवे, पुण्य संजोएँ,
ध्यान धरें, अंतर मन धोएँ ।।25।।

दीन-दुखी की मदद हो मुझसे,
मात-पिता की अदब हो मुझसे।
अंतर-दृष्टि में विवेक हो,
घर-सम्पत्ति सब नेक-एक हो ।।26।।

कृपा दृष्टि हो जिस पर माता,
रोग शोक कभी निकट न आता।
भूलें मेरी माफ करो माँ,
संकट सारे दूर करो माँ ।।27।।

पद्म-नेत्र पद्मावती जय हो,
पद्म-स्वरूपी, पद्म-हृदय हो।
पद्म-चरण ही एक चरण है,
पद्मावती माँ विघ्न-हरण है ।।28।।

जिनशासन जयवंत है,
ध्रणेन्द्र जयवंत
पद्मावती जयवंत है,
जयकारी भगवंत ।।29।।

चरण-कमल में दास का,
नमन करो स्वीकार।
भक्तों की अरजी सुनो,
अरसे मंगलाचार ।।30।।

।। दोहा ।।

पद्म-रूप पद्मावती,
पारस प्रभु हैं शीष।
'हरि ऊँ' तुम्हारी शरण में,
दो मंगल आशीष ।।31।।

।।श्री माँ शरणम।।

-: प्रिन्टिंग :-
MAXEN COMPUTERS
Pallav Puram, Phase-2, Meerut | Ph 9286 333 555